बुद्ध जयन्ती चित्रावली

BUDDHA JAYANTI ALBUM



प्रकाशन ब्यूरो

सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

PUBLICATIONS BUREAU, INFORMATION DIRECTORATE U.P.

मई, १९५६

May, 1956

मूल्य : [illegible]

Price Sixty Rupees

PRINTED BY
GLASGOW PRINTING CO. PRIVATE LTD., HOWRAH

प्राक्कथन

वर्तमान उत्तर प्रदेश का एक बड़ा भाग प्राचीन काल में 'मध्य देश' के नाम से प्रसिद्ध था। भार के इतिहास में इस 'मध्य देश' का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। बौद्ध धर्म के आरम्भिक विकास क गौरव इसी भूभाग को प्राप्त है।

उत्तर प्रदेश का उत्तर-पूर्वी भाग 'कोशल जनपद' कहलाता था। इसी जनपद के अन्तर्गत लुंबिनं नामक स्थान में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। बोधगया (बिहार) में संबोधि-प्राप्ति के अनंतर भगवा बुद्ध का प्रायः संपूर्ण जीवन इस 'मध्य देश' में ही बीता।

महात्मा बुद्ध ने अपने धर्म का सर्व प्रथम उपदेश काशी के निकट सारनाथ में किया। यहीं से उनके धर्म चक्र-प्रवर्तन 'धम्म चक्क पब्बत्तन' का श्री गणेश हुआ। सारनाथ में ही बुद्ध ने 'संघ' की स्थापन की। यह स्थान धीरे-धीरे भारत में बौद्ध धर्म का एक प्रधान केन्द्र बन गया। सम्राट अशोव के समय से लेकर ईसवी बारहवीं शती तक यहां अनेक बौद्ध स्तूपों, चैत्यों, विहारों तथा मंदिरों का निर्माण हुआ। भगवान् बुद्ध की कुछ अत्यन्त कलापूर्ण प्रतिमाओं को निर्मित करने का श्रेय सारनाथ को प्राप्त है। सातवीं शती में चीनी यात्री हुएन-सांग जब सारनाथ आया तब उसने यहां ३० बौद्ध संघाराम देखे, जिनमें १,५०० भिक्षु निवास करते थे।

लुंबिनी तथा सारनाथ के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का तीसरा बड़ा केन्द्र श्रावस्ती नगर था। यह आजकल गोंडा-बहराइच जिलों में 'सहेत-महेत' के नाम से प्रसिद्ध है। अपने जीवन-काल की २५ वर्षा ऋतुएं बुद्ध ने श्रावस्ती के प्रसिद्ध बौद्ध विहार जेतवन में व्यतीत की। उन्होंने यहां अनेक सूत्रों का तथा अधिकांश जातक कथाओं का उपदेश किया। जेतवन विहार में सहस्रों भिक्षु रहते थे। इस विहार की 'गंधकुटी' में भगवान बुद्ध स्वयं निवास करते थे। जेतवन के अतिरिक्त 'पूर्वाराम' 'मल्लिकाराम' आदि कई अन्य विहार भी श्रावस्ती में थे। बुद्ध के प्रमुख चार शिष्यों—सारिपुत्र, मौद्गलायन, महाकाश्यप तथा आनन्द की स्मृति में बनवाये गये चार बड़े स्तूप भी यहां विद्यमान थे।

बौद्ध धर्म का चौथा प्रमुख केन्द्र सांकाश्य या संकस्स (वर्तमान संकिस्सा, जिला फर्रुखाबाद) भी उत्तर प्रदेश में है। बौद्ध अनुश्रुति के अनुसार भगवान् बुद्ध त्रयस्त्रिंश स्वर्ग से, अपनी माता को उपदेश देने के बाद, यहीं उतरे थे।

पांचवाँ, मुख्य बौद्ध तीर्थ कुशीनगर (वर्तमान कसिया, जिला देवरिया) भी उत्तर प्रदेश में स्थित है। यही वह पुनीत स्थल है जहां भगवान् बुद्ध महापरिनिर्वाण को प्राप्त हुए। यहां के परिनिर्वाण-मंदिर में बुद्ध की लेटी हुई २० फुट लम्बी प्रतिमा दर्शकों को आश्चर्य में डालती है। प्राचीन चैत्यों, स्तूपों तथा विहारों के भग्नावशेष आज भी कुशीनगर में विद्यमान हैं।

उक्त पांचों प्रमुख बौद्ध तीर्थों के अतिरिक्त दो अन्य उल्लेखनीय केन्द्र—मथुरा तथा कौशाम्बी—भी उत्तर प्रदेश के अंतर्गत हैं। बौद्ध मूर्तिकला के केन्द्र के रूप में मथुरा का नाम बहुत प्रसिद्ध है। बुद्ध मूर्ति का सर्वप्रथम

निर्माण मथुरा के ही कलाकारों द्वारा निष्पन्न हुआ। यहां की बनी हुई बुद्ध और बोधिसत्व प्रतिमाएं भारत के सुदूर स्थानों तक भेजी जाती थीं। कुषाण तथा गुप्तकाल की सैकड़ों बौद्ध कला-कृतियां मथुरा से प्राप्त हुई हैं। हुएन-सांग के समय तक इस नगर में अनेक बौद्ध स्मारक थे। इस यात्री ने २० संघारामों का उल्लेख किया है, जिनमें २,००० भिक्षु निवास करते थे। बौद्ध धर्म के महान् आचार्य उपगुप्त का निवास भी मथुरा में था।

कौशाम्बी (वर्तमान कोसम, जिला इलाहाबाद) में बुद्ध के समय से लेकर लगभग ६०० ई० तक बौद्ध धर्म की उन्नति का पता चलता है। बुद्ध के समय में यहां तीन बड़े विहारों का निर्माण हुआ, जिनके नाम घोषिताराम, कुक्कुटाराम तथा पावारिक अम्बवन थे। हाल में कौशाम्बी के एक पुराने टीले की खुदाई कराते समय घोषिताराम विहार के अवशेषों का पता चला है। बुद्ध और बोधिसत्व की अनेक मूर्तियां यहां से प्राप्त हुई हैं। इनमें से कुछ की कला उत्कृष्ट कोटि की हैं।

बौद्ध मूर्त्ति-कला तथा स्थापत्य के जो अवशेष उत्तर प्रदेश के उपर्युक्त सात केन्द्रों तथा अन्य कई स्थानों में प्राप्त हुए है उन्हें देखने से पता चलता है कि इन कलाओं का विकास इस भूभाग में एक दीर्घकाल तक होता रहा। सारनाथ और मथुरा से प्राप्त बुद्ध की कई गुप्तकालीन प्रतिमाएं तो भारतीय कला की अनुपम कृतियां हैं। शारीरिक सौकुमार्य के साथ आध्यात्मिक सौंदर्य, अलौकिक गांभीर्य और करुणा का समन्वय इन मूर्तियों में मिलता है। सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, मथुरा, कौशाम्बी आदि स्थानों में अशोक के समय से लेकर प्रायः बारहवीं शती तक जो बौद्ध इमारतें बनीं उनमें से कुछ के भग्नावशेष अब भी उन स्थानों पर देखे जा सकते हैं और उन इमारतों के आकार-प्रकार का अनुमान लगाया जा सकता है।

सम्राट अशोक ने अपने काल में भारत के विभिन्न स्थानों पर अभिलेख उत्कीर्ण करवाये। उत्तर प्रदेश के देहरादून जिले में कालसी नामक स्थान पर एक लघु शिला आज तक विद्यमान है। इस पर अशोक के १४ शिलालेख उत्कीर्ण हैं। इसके अतिरिक्त सारनाथ, कौशाम्बी, प्रयाग, लुम्बिनी आदि में भी अशोक के अभिलेख मिले हैं।

बौद्ध साहित्य के निर्माण में भी उत्तर प्रदेश का विशेष योग रहा है। श्रावस्ती, कुशीनगर, मथुरा आदि स्थानों में यह साहित्य विभिन्न समयों में लिखा गया। बौद्धों की प्रमुख शाखा सर्वास्तिवाद का उत्तर प्रदेश प्रमुख केन्द्र रहा है। कालान्तर में यहां के कई स्थानों में महायान मत का भी उदय तथा विकास हुआ। इन दोनों प्रमुख विचार-धाराओं से संबंधित अपार साहित्य की रचना उत्तर प्रदेश में हुई।

इस प्रकार बौद्ध धर्म, दर्शन, कला और साहित्य का बहुमुखी विकास उत्तर प्रदेश की भूमि पर एक दीर्घकाल तक होता रहा। यहां की उर्वरा भूमि में बौद्ध धर्म अंकुरित तथा प्रस्फुटित हुआ और यहीं उसने अपनी जड़ें गहरी जमायीं। उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों से बौद्ध-धर्म-प्रचारक विदेशों में भी गये और उन्होंने वहां तथागत के सद्धर्म का आलोक फैलाया।

प्रस्तुत एल्बम (चित्र-संग्रह) में उत्तर प्रदेश के प्रमुख बौद्ध स्थलों तथा वहां से उपलब्ध सुन्दर कला-कृतियों के चित्र दिये गये हैं। इन चित्रों को देखने से इस बात का आभास मिल सकेगा कि बौद्ध धर्म के उद्भव तथा विकास में इस प्रदेश का कितना बड़ा भाग रहा है।

भगवती शरण सिंह

सूचना-संचालक

INTRODUCTION

THE major part of the present-day Uttar Pradesh was formerly known as *Madhya Deśa.* In ancient India it occupied a very important position, being regarded as the land *par excellence.* The early development of Buddhism took place in the soil of *Madhya Deśa.*

The north-eastern portion of Uttar Pradesh was, in the past, called *Kośala Janapada* (kingdom). The small territory of the Sakyas of Kapilavastu was included in Kosala. Gautama, the Buddha, was born at Lumbini near Kapilavastu. After his Enlightenment at Bodhgaya, Buddha spent almost his whole life in *Madhya Deśa.*

The First Sermons were preached by Buddha at Sarnath near Banaras (ancient Varanasi). From here started his new *Dhamma,* which has been called *Dhamma Chakka Pabbattama* (Revolving of the 'Wheel of Law'). It was here at Sarnath that Buddha lay the foundations of his *Samgha.* Gradually this place grew into a great Buddhist centre in India. From the time of Asoka right up to 1200 A.D. several Buddhist *Stūpa, Chaityas, Vihāras* and temples were built at Sarnath. The credit of carving some exquisitely fine images of Buddha goes to Sarnath. In the 7th century A.D. when the Chinese pilgrim Hiuen-Tsang visited Sarnath he found here 30 monasteries, in which were living 1,500 monks.

Besides Lumbini and Sarnath, the third Buddhist centre, Sravasti, was also in *Madhya Deśa.* This place is now called Sahet-Mahet in the Gonda-Bahraich districts of Uttar Pradesh. Buddha spent no less than 25 rainy seasons in the famous Jetavana monastery of Sravasti. He preached here a number of *Sūtras* and most of the *Jātaka* stories were recited here. Jetavana was the residence of several thousands of monks. Buddha himself lived in the *Gandhakutī* of this *Vihāra.* Besides Jetavana, there were several other *Vihāras* in Sravasti, like *Pūrvārāma* and *Mallikārāma Vihāra.* The four big *stūpas* built in honour of Sariputtra, Maudgalayana, Mahakasyapa and Anand were also located in Sravasti.

The fourth chief Buddhist centre in U.P. is Sankasya or Sankassa (modern Sankissa in district Farrukhabad). According to the Buddhist tradition, Buddha descended here from the *Trayastrimśa* Heaven, where he had gone to preach his mother.

The fifth centre of great importance in U.P. is Kusinagar (modern Kasia in Deoria district). It was here that Buddha attained his *mahāparinirvāna* (great demise). In the *parinirvāna* temple at Kasia is preserved the 20 feet long image of Buddha lying on death-bed. It is, no doubt, a wonderful piece of art. The remains of some ancient *Chaityas, Stūpas* and *Vihāras* can still be seen at Kasia.

Apart from the five above-mentioned Chief Buddhist Centres, there are two more places in U.P., one Mathura and the other Kausambi. As a centre of Buddhist art Mathura occupies a unique position. The sculptors of Mathura were the first to conceive the idea of preparing Buddha's image in the anthropomorphic form. The statues of Buddha and Bodhisattva carved by the artists of Mathura early in the Kushana period were sent to distant places. Hundreds of Buddhist sculptures of high artistic value, belonging to the Kushana and Gupta periods, have been obtained at Mathura. Till the time of Hiuen-Tsang's visit in the 7th century A.D. a number of *Stūpas* and *Vihāras* were in existence at Mathura. This pilgrim has referred to 20 Buddhist monasteries at Mathura in which were living 2,000 monks, The great preacher Upagupta had his residence at Mathura.

Kausambi has been identified with Kosam, a village in the Allahabad district of U.P. From the time of Buddha up to about 600 A.D. Buddhism blossomed here. During Buddha's life-time three big monasteries were established here. Their names were *Ghoshitārāma, Kukkutārāma* and *Pāvārika Ambavana.* Recently while digging one of the mounds at Kausambi remains of the first mentioned monastery have come to light. Several Buddha and Bodhisattva images have also been unearthed here, some of them exhibiting high workmanship.

Whatever fragments of Buddhist sculpture and architecture are now extant at the above mentioned seven centres and other places of Uttar Pradesh they undoubtedly show that these fine-arts developed in this area for a pretty long time. Some statues of Buddha from Sarnath and Mathura assigned to the Gupta period, are superb pieces of sculpture and represent the best in Indian art. The artists have not only successfully portrayed the bodily form but have depicted the spiritual elegance, serenity and compassion, of which the Buddha was an embodiment. From the time of Asoka to the 12th century A. D. numerous Buddhist monuments were constructed at Sarnath, Kusinagar, Sravasti, Mathura, Kausambi and other places. Remains of some of these structures have been found, which throw some light on the architecture of different periods.

A large number of inscriptions were engraved by Asoka at various places in India. A rock bearing fourteen Edicts of Asoka is still preserved at Kalsi, in Dehradun district of Uttar Pradesh. Pillar-Edicts of Asoka have been found at Meerut, Sarnath, Kausambi, Allahabad, Lumbini etc. These inscriptions of Asoka are very valuable for the study of the religious and social conditions of the Maurya period.

The contribution of Uttar Pradesh towards creation of original Buddhist literature has not been insignificant. The literature, in its various forms, grew up at places like Sravasti, Kusinagar and Mathura at different periods, The *Sarvāstivādin* Branch of the Buddhists found in Uttar Pradesh a congenial atmosphere for its growth. Gradually the Mahayana school also had its strong hold at several places in U.P. These two main Buddhist schools grew up here side by side producing enormous literature of great value.

We thus find that the Buddhist religion, philosophy, art and literature had an unhampered growth in Uttar Pradesh for a long time. It was in this fertile land of

Uttar Pradesh that the plant of Buddhism gradually assumed the form of a gigantic tree. Buddhist missionaries from this land not only confined their activities to India but also went outside India where they spread the light of *'Dhamma'*, as revealed by Tathagata.

The present Album contains illustrations from the chief Buddhist sites in U.P. includiug the best sculptures. These illustrations will give an idea of the contribution of Uttar Pradesh to the development of Buddhism.

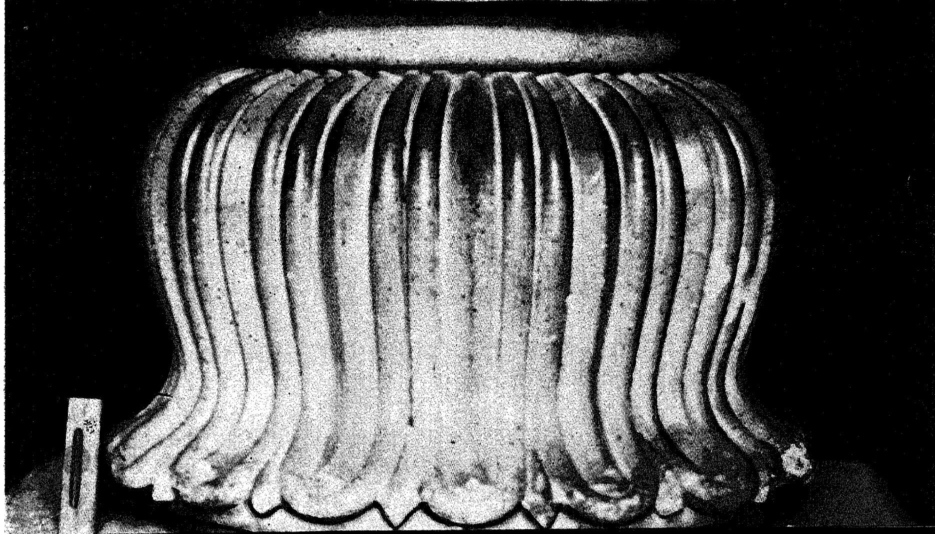
B. S. SINGH
Director of Information, U.P.

बुद्ध जयन्ती चित्रावली

BUDDHA JAYANTI ALBUM

सारनाथ में अशोक-स्तंभ के ऊपर का ओपयुक्त शीर्ष (परगहा)
जिस पर सिंहों तथा अन्य पशुओं का कलापूर्ण चित्रण है

Asokan Lion Capital at Sarnath, bearing Lion
figures and other animals
Time—3rd century B.C.



संकिस्सा में प्राप्त अशोक-कालीन स्तंभ-शीर्ष (परगहा),
जिस पर हाथी की आकृति बनी है, ई० पूर्व तृतीय शती

The Asokan elephant-capital at Sankissa
Time—3rd century B.C.



सारनाथ से प्राप्त कलापूर्ण वेदिका स्तंभ,
समय– ई० पूर्व प्रथम शती
(सारनाथ संग्रहालय)

Railing pillars from Sarnath tastefully carved
Time—First century B.C.
(Sarnath Museum)

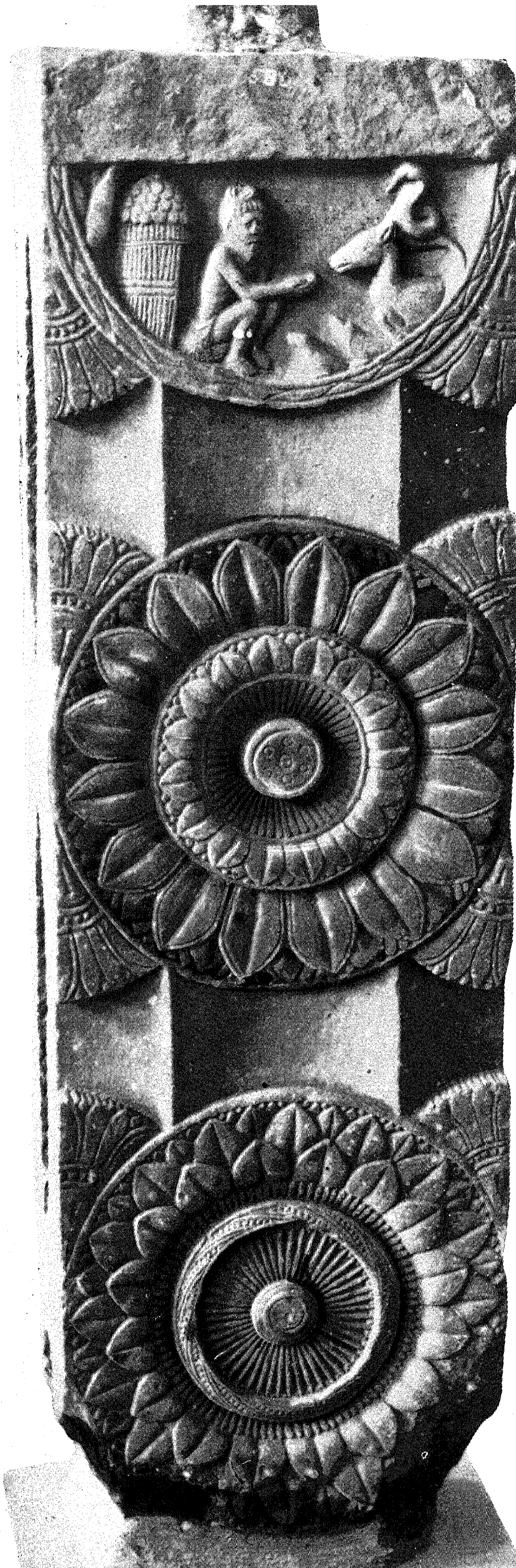






वेदिका-स्तंभ जिस पर एक जातक-कथा आलेखित है।
समय—ई० पूर्व प्रथम शती
(मथुरा संग्रहालय)

Railing pillar depicting the story of the Jātaka
of the 'Worst Evil'
Time—1st century B.C.
(*Mathura Museum*)



विशाल बोधिसत्व प्रतिमा, जिसे भिक्षु-बल के द्वारा सारनाथ में प्रतिष्ठापित किया गया। मथुरा कला-शैली; कुषाण काल
(सारनाथ संग्रहालय)

Standing Bodhisattva image donated by Friar Bala, from Sarnath. Mathura School; Kushana period
(*Sarnath Museum*)



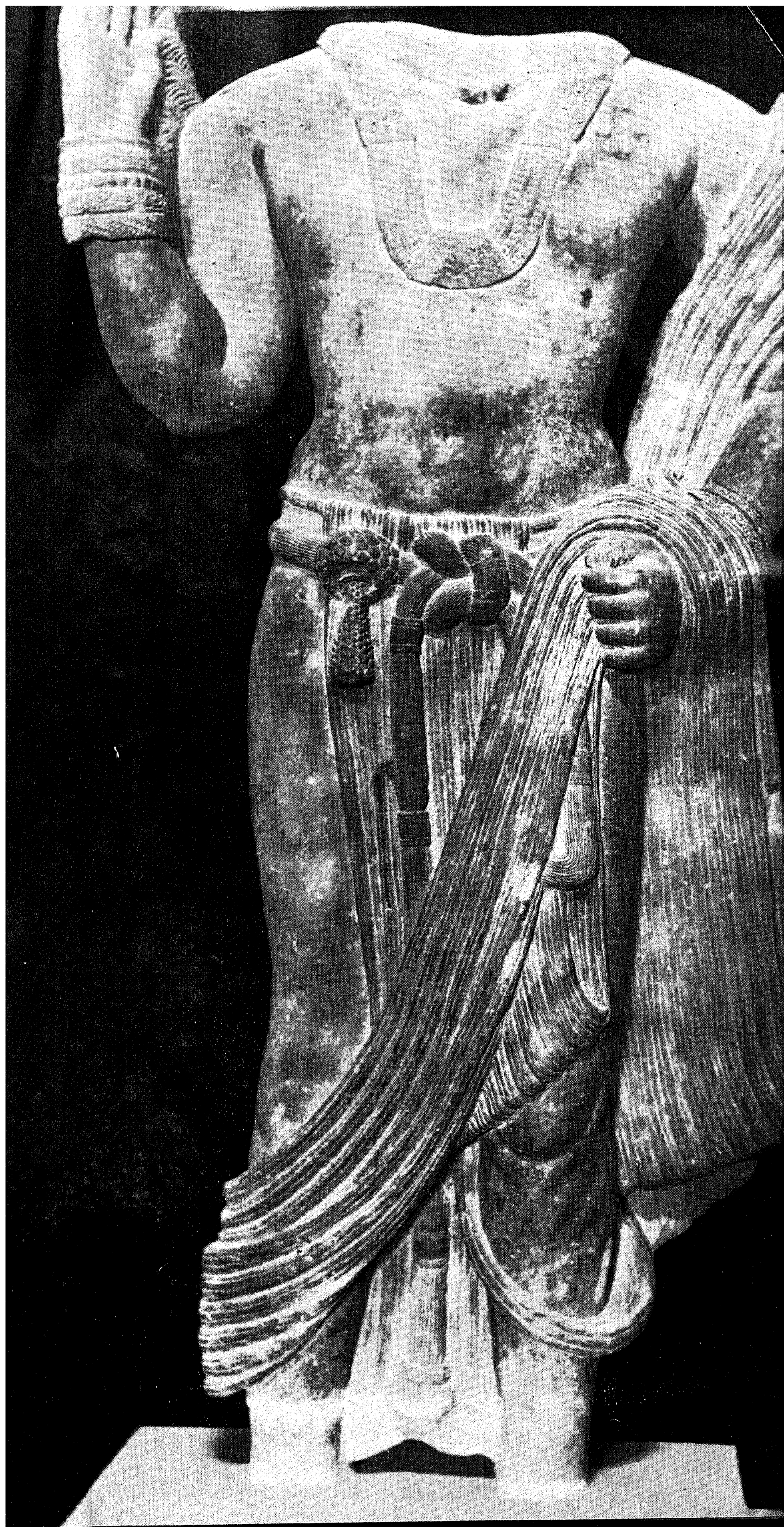
महोली (जि० मथुरा) से प्राप्त बोधिसत्व की विशालकाय
प्रतिमा; प्रारंभिक कुषाण काल
(मथुरा संग्रहालय)

Colossal Bodhisattva statue from Maholi
Early Kushana period
(*Mathura Museum*)



अभयमुद्रा में बोधिसत्व की मूर्ति; प्रारंभिक कुषाण काल;
मथुरा कला
(लखनऊ संग्रहालय)

Image of Bodhisattva in *Abhayamudrā*
Early Kushana period
(*State Museum, Lucknow*)



अभयमुद्रा में भगवान बुद्ध ; चौकी पर उत्कीर्ण लेख में उन्हें बोधिसत्व कहा गया है। कटरा केशवदेव मथुरा से प्राप्त, कुषाण काल

(मथुरा संग्रहालय)

Buddha in *Abhayamudrā*. The inscription on the pedestal calls him 'Bodhisattva'. From Katra Keshavadeva, Mathura, Kushana period.

(*Mathura Museum*)



पद्मासन पर बैठे हुए अभयमुद्रा में भगवान बुद्ध की मूर्ति
मथुरा कला शैली; अहिच्छत्रा (जि० बरेली) में प्राप्त
कुषाण काल

Buddha seated in *Abhayamudrā*. Mathura School of Art. From Ahichchhatra (Dist. Bareilly) Kushana period



अभयमुद्रा में भगवान बुद्ध की सर्वांगपूर्ण मूर्ति, जिसकी चौकी पर ई० दूसरी शती का ब्राह्मी लेख उत्कीर्ण है। मथुरा शैली की प्रतिमा ; अहिच्छत्रा (जि० बरेली) से प्राप्त

Inscribed Buddha image in *Abhayamudrā*. The pedestal bears a Brahmi inscription of the 2nd century A.D. Mathura School of Art. From Ahichchhatra (Dist. Bareilly)



बायें हाथ में अमृत-घट लिए हुए अभयमुद्रा में बोधिसत्व मैत्रेय की अभिलिखित मूर्ति, समय—ई० तीसरी शती; अहिच्छत्रा (जि० बरेली) से प्राप्त

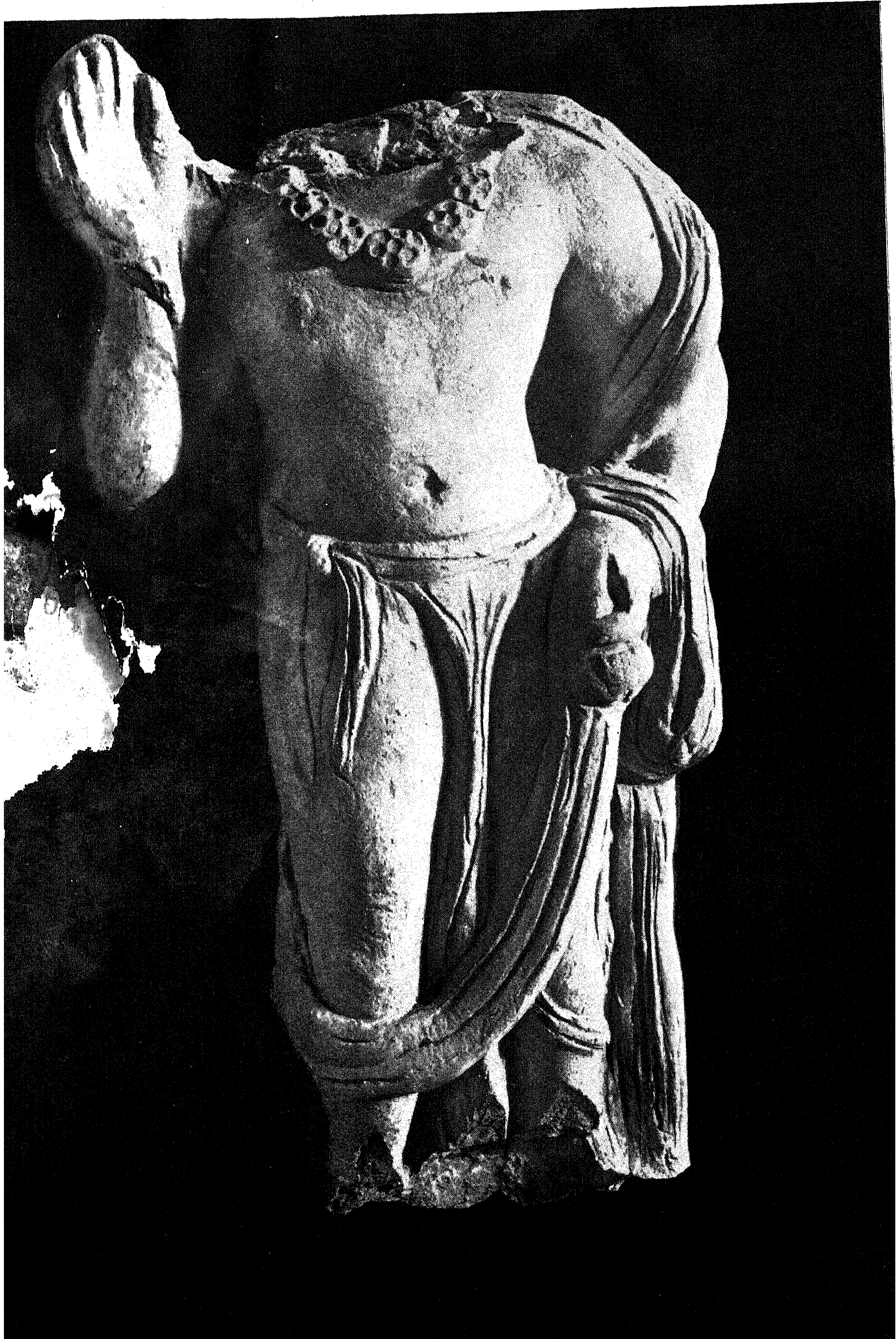
(राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

Bodhisattva Maitreya in *Abhayamudrā* holding a vase of nectar.
Time--3rd century A.D.
From Ahichchhatra (Dist. Bareilly)
(National Museum, New Delhi)



हस्तिनापुर की खुदाई में प्राप्त बोधिसत्व मैत्रेय की मिट्टी की प्रतिमा; कुषाण काल
(राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

Hastinapur: Terracotta figure of Bodhisattva Maitreya, Kushana period
(*National Museum, New Delhi*)



काश्यप बुद्ध की अभिलिखित मूर्ति का निचला भाग ;
कुषाण काल

(मथुरा संग्रहालय)

Lower part of an inscribed image of Kasyapa
Buddha. Kushana period

(Mathura Museum)



इन्द्रशिला गुफा में बैठे हुए बुद्ध के प्रति इन्द्रादि का सम्मान-
प्रदर्शन ; प्रारंभिक कुषाण काल

(मथुरा संग्रहालय)

Indra with others paying homage to Buddha
Early Kushana period

(*Mathura Museum*)



लुम्बिनी उद्यान में बुद्ध का जन्म. गांधार-कला की मूर्ति;
समय—लगभग ३०० ई०
(इलाहाबाद संग्रहालय)

Birth of Buddha at Lumbini, Gandhara Art.
Time about 300 A.D.
(*Allahabad Museum*)



महापरिनिर्वाण का दृश्य : बुद्ध शय्या पर लेटे हैं; उनके
चारों ओर शोकाकुल लोग हैं तथा ऊपर दो वृक्ष-देवता
अंकित हैं; कुषाण काल
(वराह मंदिर, मथुरा)

Buddha on his death-bed
Kushana period
(Varaha temple, Mathura)



कौशांबी की खुदाई से प्राप्त शिलापट्ट, जिस पर घोषिताराम
बौद्ध विहार का उल्लेख है।
(कौशांबी कक्ष, प्रयाग विश्वविद्यालय)

Inscribed slab referring to Ghoshitarama
Monastery of Kausambi
(*Kausambi section, Allahabad University*)



माँट (जि० मथुरा) में स्थापित कुषाण-देवकुल में प्राप्त
सम्राट कनिष्क की कायपरिमाण मूर्ति
(मथुरा संग्रहालय)

Life-size statue of Emperor Kanishka,
(78-101 A.D.), the great patron of Buddhism
From Mant, Dist. Mathura
(Mathura Museum)

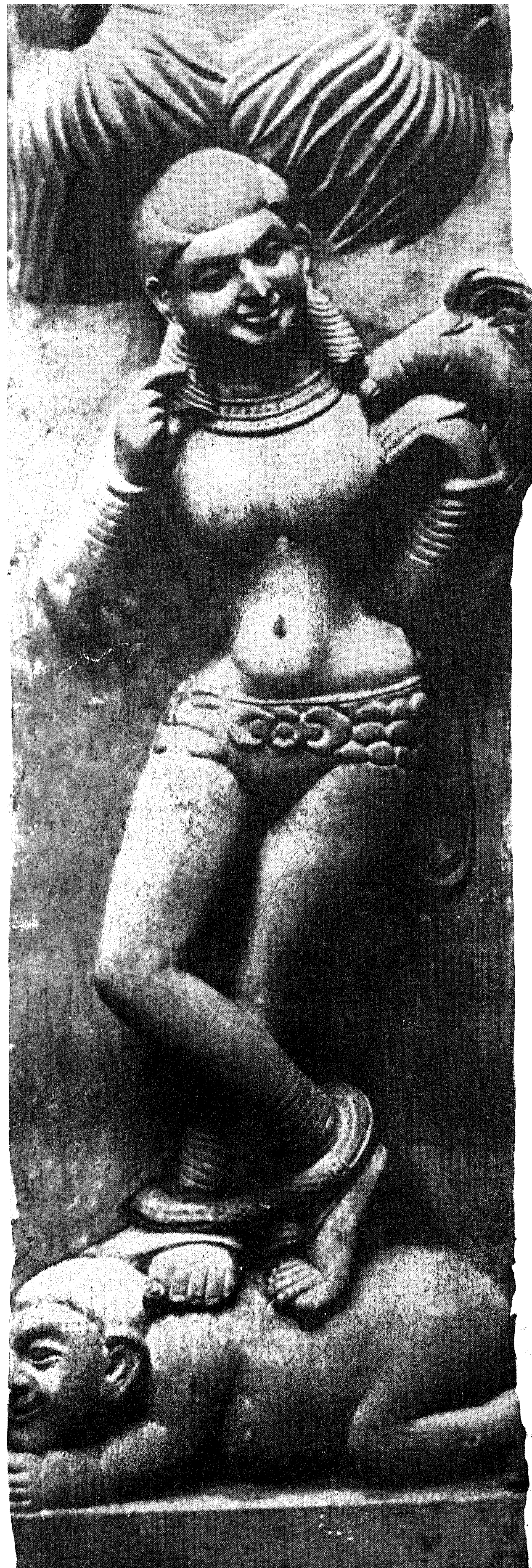


मथुरा से प्राप्त वेदिका-स्तंभ, जिसपर शुक के साथ क्रीड़ा करती हुई आकर्षक मुद्रा में एक ललना उत्कीर्ण है।
कुषाण काल

(मथुरा संग्रहालय)

Railing pillar carved with a lady figure, in graceful pose, playing with a bird ; Kushana period

(*Mathura Museum*)



मथुरा से प्राप्त दो वेदिका-स्तंभ जिन पर विविध लीला-भावों
में सुन्दरियों के चित्रण हैं। कुषाण काल
(इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता)

Two Railing pillars from Mathura showing
sportive damsels, Kushana period
(*Indian Museum, Calcutta*)

बौद्ध वेदिका के दो स्तंभ : एक पर प्रसाधन का दृश्य है और दूसरे पर स्नानोपरान्त वस्त्र धारण का। भूतेश्वर (मथुरा) से प्राप्त; कुषाण काल

(मथुरा संग्रहालय)

Two pillars of the Buddhist railing at Bhuteswar (Mathura) Kushana period

(Mathura Museum)

अलंकृत प्रभामंडल संयुक्त बुद्ध की सर्वांगसुन्दर प्रतिमा
मथुरा कला; समय—ई० पाँचवीं शती
(राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली)

Perfect Image of Buddha with a decorative halo.
Mathura style
Time—5th century A.D.
(National Museum, New Delhi)


M.S.

सम्यक् संबुद्ध बुद्ध की गुप्त कालीन प्रतिमा; चौकी पर उत्कीर्ण लेख के अनुसार उसे यशदिन्न द्वारा प्रतिष्ठापित किया गया

(मथुरा संग्रहालय)

Buddha, the Enlightened one.
Donated by Yasadinna
Time—5th century A.D.

(Mathura Museum)



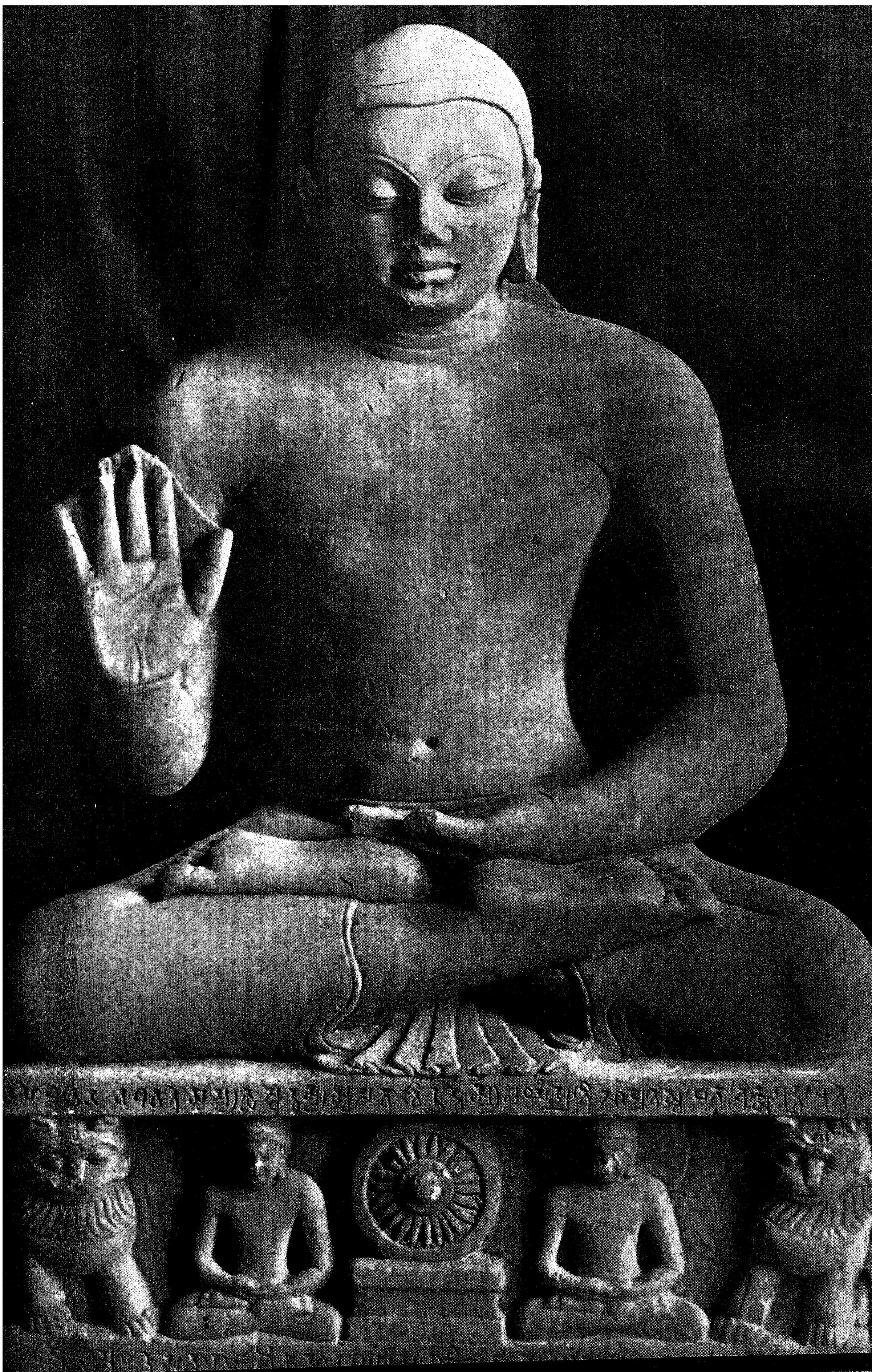
धर्मचक्र प्रवर्तन-मुद्रा में स्थित बुद्ध की अत्यन्त कलापूर्ण
प्रतिमा; समय ई० पांचवीं शती
(सारनाथ संग्रहालय)

Exquisitely carved image of Buddha seated in
the Attitude of Revolving the 'Wheel of Law'
Time—5th Century A.D.
(*Sarnath Museum*)



अभयमुद्रा में बुद्ध की अभिलिखित मूर्ति, कुमार गुप्त प्रथम के
राज्यकाल (४१३-४५५ ई०) में प्रतिष्ठापित मानकुवर
(जि० इलाहाबाद) से प्राप्त
(लखनऊ संग्रहालय)

Image of Buddha seated in *Abhayamudrā*, made
in the time of Kumaragupta I (413-455 A.D.)
From Mankuvar (Dist. Allahabad)
(*Lucknow Museum*)



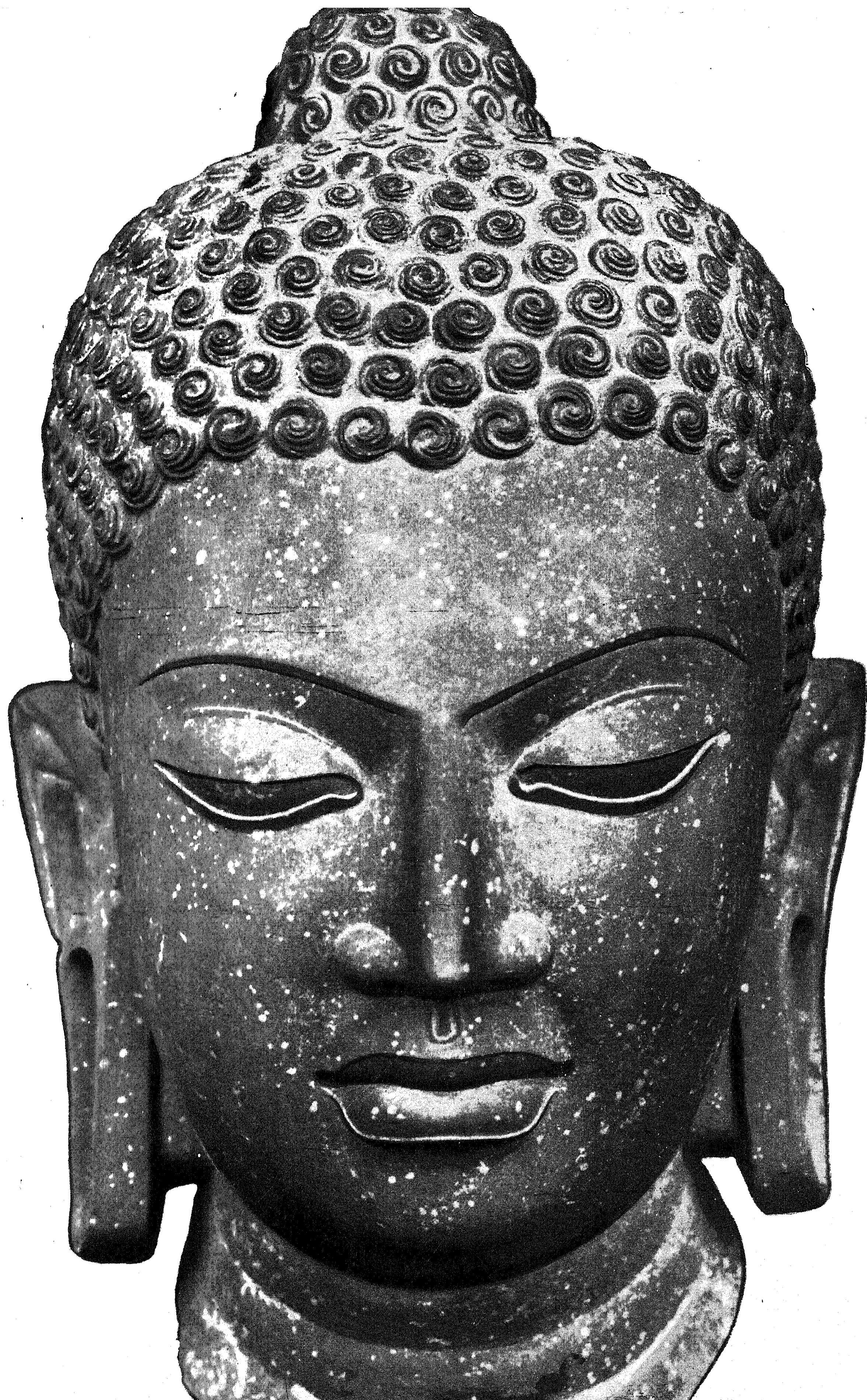
खड़ी हुई बुद्ध मूर्ति, वाजिदपुर (जिला कानपुर) से प्राप्त; गुप्तकाल
(राजकीय संग्रहालय, लखनऊ)

Image of Buddha from Bajidpur, Dt. Kanpur,
Gupta period
(*State Museum, Lucknow*)



कुंचित केश तथा अर्धोन्मीलित नेत्र युक्त बुद्ध का कलात्मक मस्तक, चामुंडा टीला (मथुरा) से प्राप्त, गुप्त काल
(मथुरा संग्रहालय)

Buddha's head showing curly hair and half closed eyes. From Chamunda Mound (Mathura) Gupta period
(*Mathura Museum*)



बोधिसत्व प्रतिमा का धड़, जैसिंहपुरा, मथुरा से प्राप्त;
गुप्त काल

(मथुरा संग्रहालय)

Torso of Bodhisattva image from Jaisinghpura,
Mathura ; Gupta period

(*Mathura Museum*)

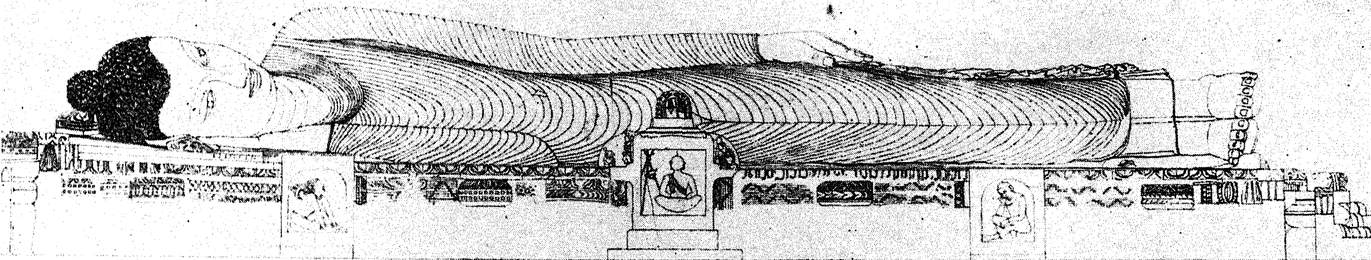


कुशीनगर के परिनिर्वाण मन्दिर में लेटी हुई बुद्ध की
२० फुट लंबी प्रतिमा ; गुप्त काल

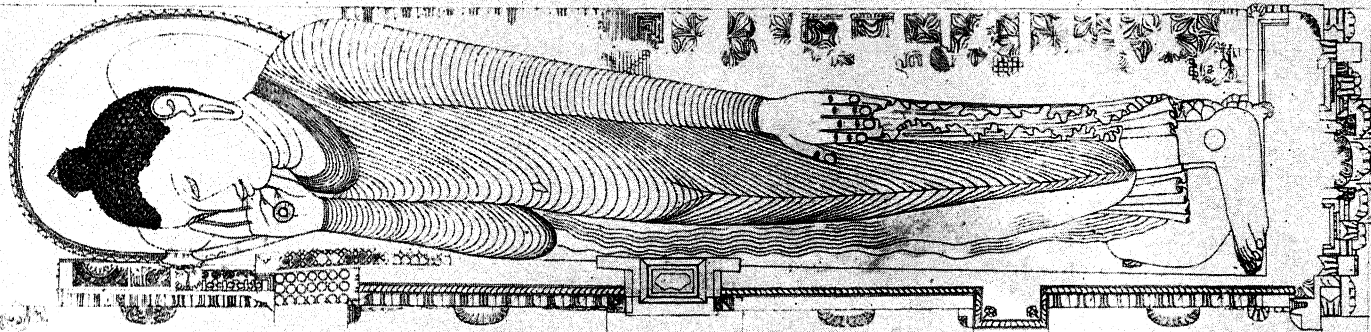
Colossal Buddha statue at Kusinagar showing
Parinirvāna ; Gupta period

KASIA EXCAVATIONS

IMAGE OF DYING BUDDHA



ELEVATION



PLAN

SCALE

INCHES 12 9 6 3 0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 FEET

गुप्तकालीन बुद्ध-प्रतिमा का सिर
भीटा (जि० इलाहाबाद) से प्राप्त
(इलाहाबाद संग्रहालय)

Head of Buddha. From Bhita, Dist. Allahabad
Gupta period
(Allahabad Museum)



बोधिसत्व का मस्तक कौशांबी (जि० इलाहाबाद) से प्राप्त
पूर्व मध्यकाल
(इलाहाबाद संग्रहालय)

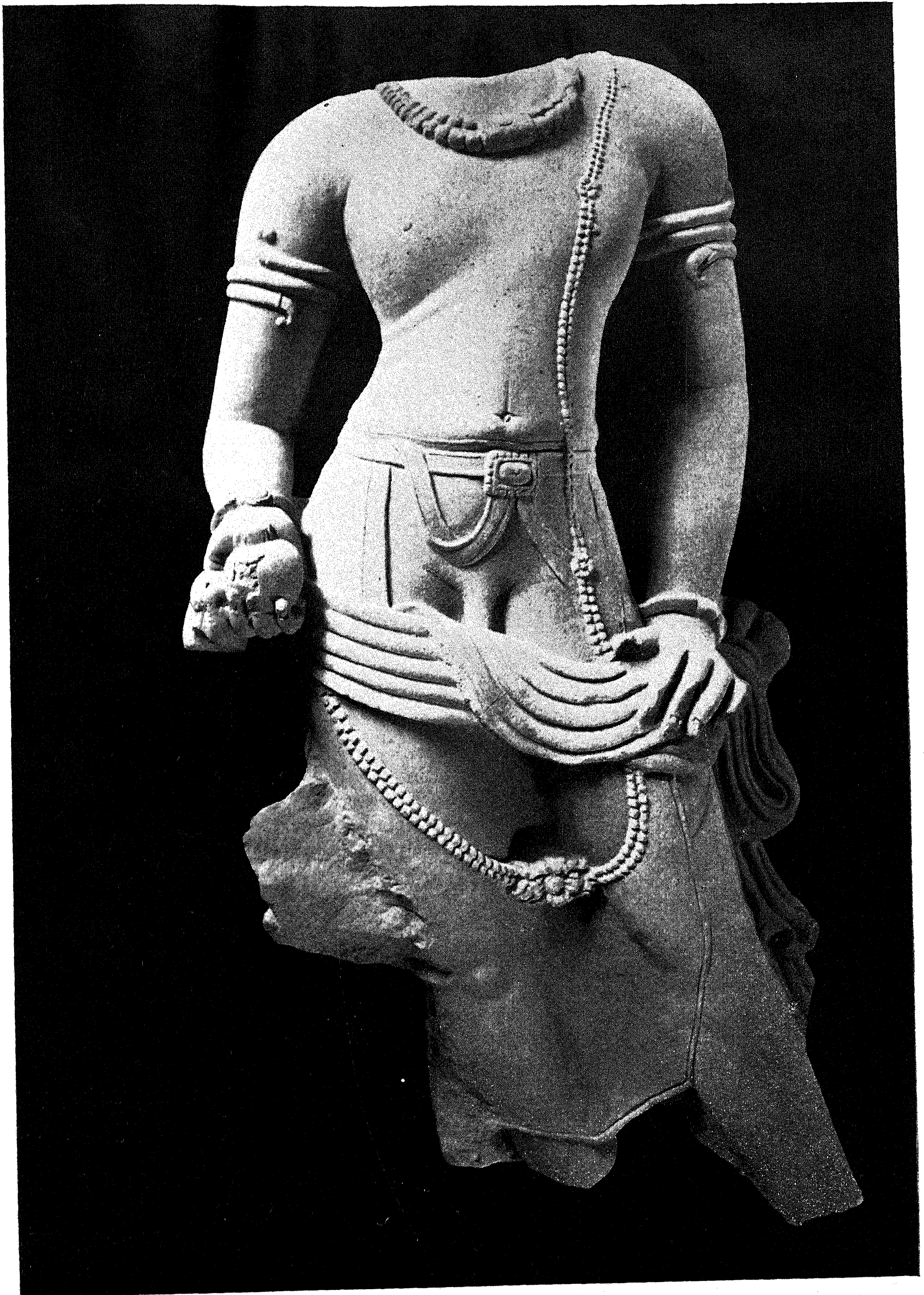
Head of Buddha from Kausambi (Dist. Allahabad), Early Medieval period
(*Allahabad Museum*)



शिलापट्ट जिस पर बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाएँ (जन्म, मार-विजय, प्रथम उपदेश तथा परिनिर्वाण) अंकित हैं। अहिच्छत्रा (जि० बरेली) से प्राप्त ; मथुरा कला शैली ;
समय—ई० तृतीय शती
(राजकीय संग्रहालय, लखनऊ)

Slab bearing the four Main Events of Buddha's life. From Ahichchhatra (Dist. Bareilly).
Mathura School of Art
Time–3rd century A.D.
(*Lucknow Museum*)





बोधिसत्व पद्मपाणि की मूर्ति; सारनाथ से प्राप्त; गुप्त काल
(इंडियन म्यूजियम, कलकत्ता)

Bodhisattva Padmapani from Sarnath
Gupta period
(Indian Museum, Calcutta)



कमल पुष्प पर खड़े हुए लोकनाथ की प्रतिमा
उत्तर गुप्त काल
(सारनाथ संग्रहालय)

Lokanath standing on lotus
Late Gupta period
(*Sarnath Museum*)



सिंहनाद अवलोकितेश्वर की प्रतिमा; महोबा से;
समय—ई० ११ वीं शती
(लखनऊ संग्रहालय)

Simhanāda Avalokiteshvara. From Mahoba
Time–11th century A.D.
(*Lucknow Museum*)



सनाल कमल धारण किये हुए बौद्ध देवी तारा की प्रतिमा।
उत्तर मध्य काल
(लखनऊ संग्रहालय)

Buddhist Goddess Tara holding stalked lotus
Late Medieval period
(Lucknow Museum)


O 226
7-4-17

बौद्ध देवी वज्रतारा की प्रतिमा, समय—ई० दसवीं शती
(सारनाथ संग्रहालय)

Buddhist Goddess Vajratārā
Time–10th century A.D.
(Sarnath Museum)



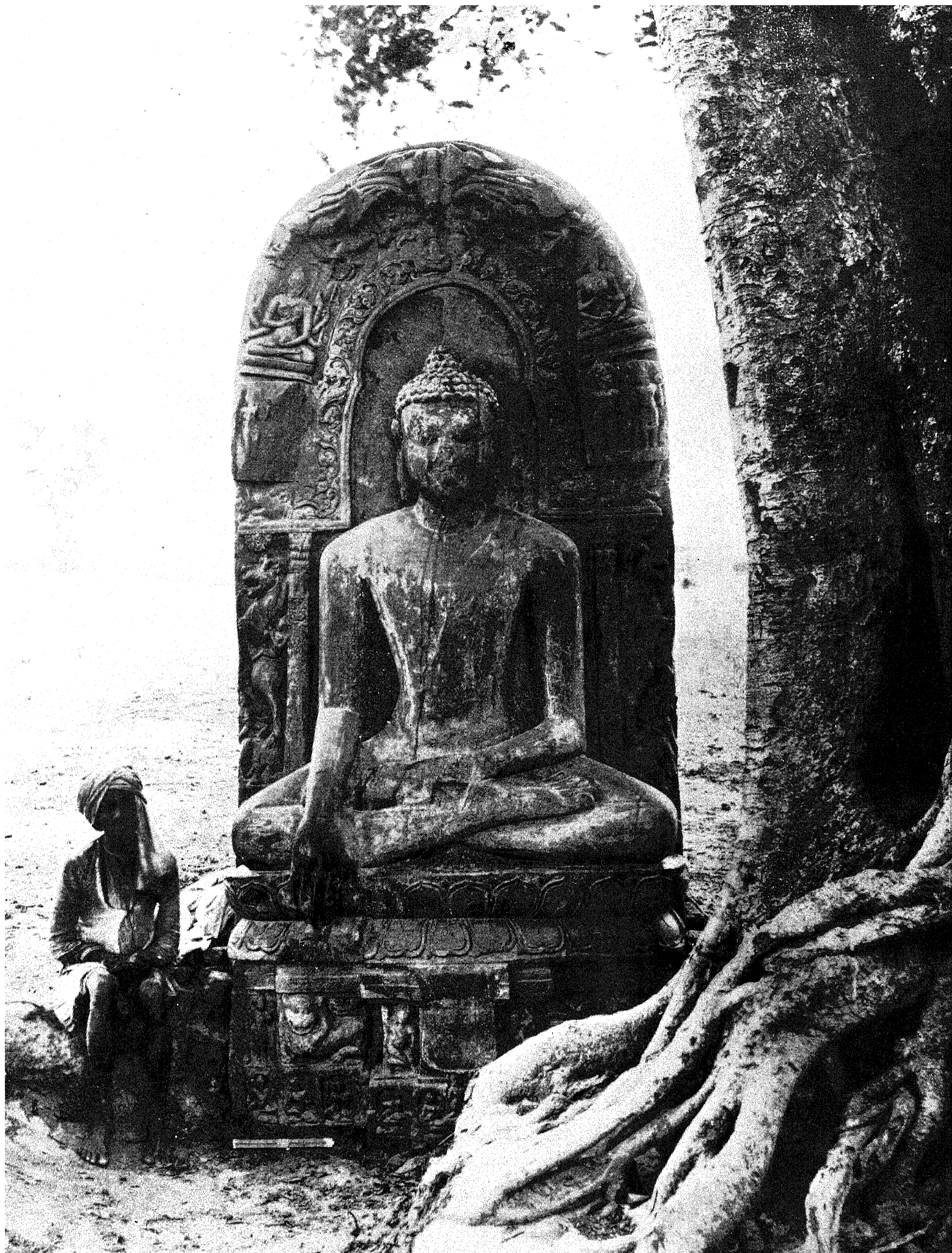
बौद्ध देवी मारीची की प्रतिमा, उत्तर मध्य काल
(राजकीय संग्रहालय, लखनऊ)

Buddhist Goddess Mārichi
Late Medieval period
(State Museum, Lucknow)



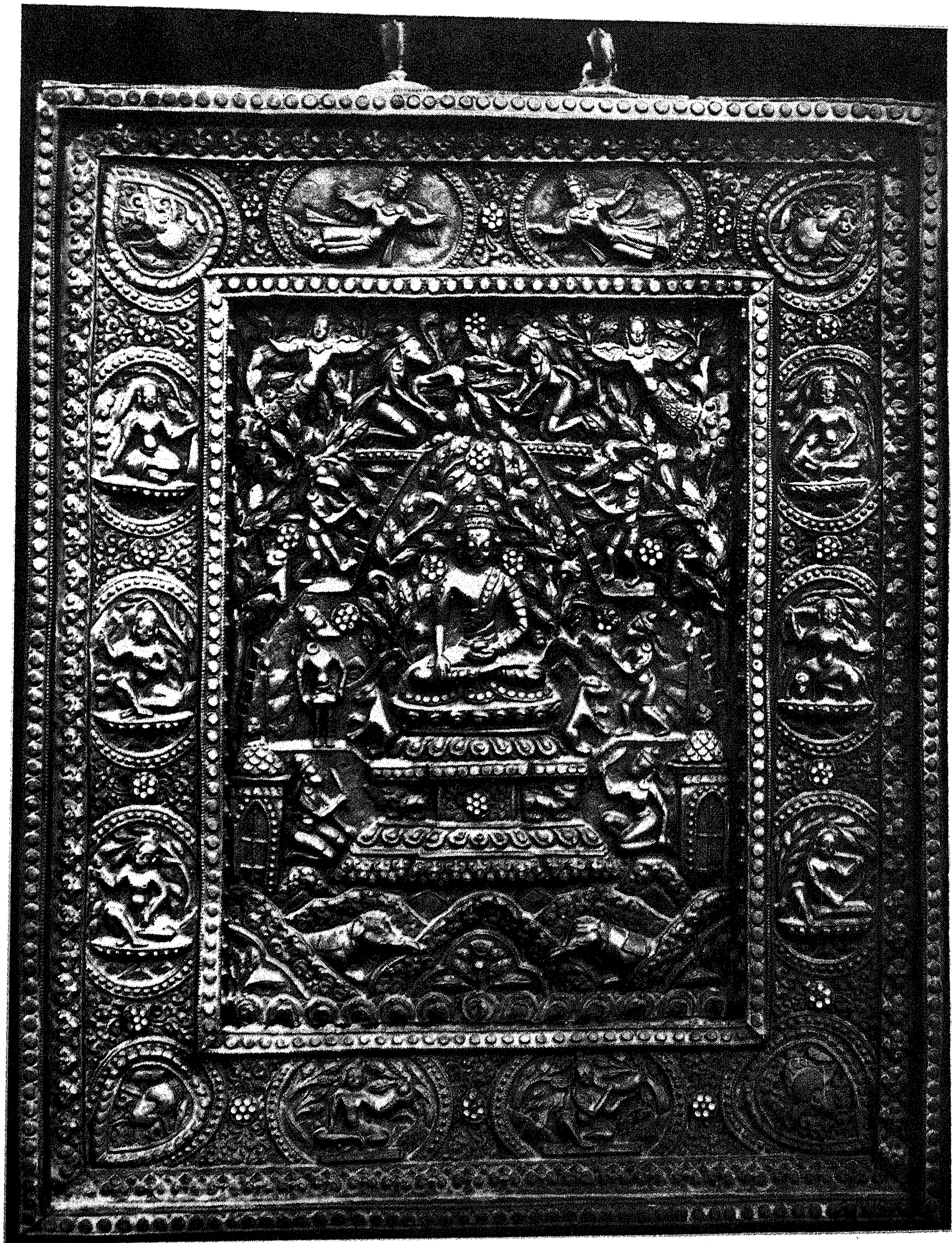
कसिया (कुशीनगर) में भूमि-स्पर्श-मुद्रा में बैठी हुई काले पाषाण की अभिलिखित बुद्ध प्रतिमा जो माथाकुंवर नाम से प्रसिद्ध है; मध्य काल

Inscribed Buddha Image called 'Mathakuwar' seated in Earth-Touching Attitude
Late Medieval period
Kasia (Kusinagar)



तपस्या में मग्न बुद्ध और उनके ध्यान-भग्न का प्रयत्न करते
हुए ससैन्य कामदेव ; चौदहवीं शती की कांस्य मूर्ति
(मथुरा संग्रहालय)

Buddha in penance and Māra with his retinue
attacking him. Bronze, 14th century
(*Mathura Museum*)



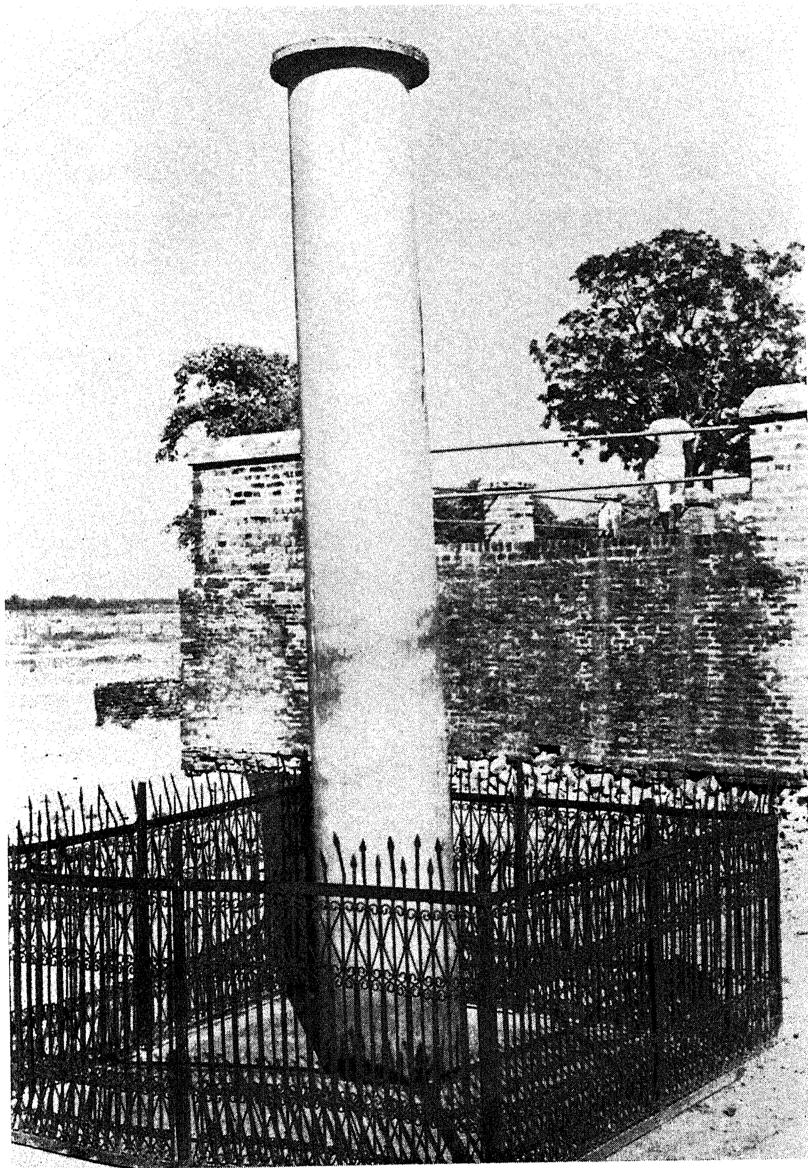
लुम्बिनी का एक दृश्य; बायीं ओर बुद्ध के जन्म-स्थान पर
अशोक का अभिलिखित स्तंभ खड़ा है।

A scene of the Lumbini Garden. On the left
is standing the inscribed pillar of Asoka
erected on the birth-place of Buddha



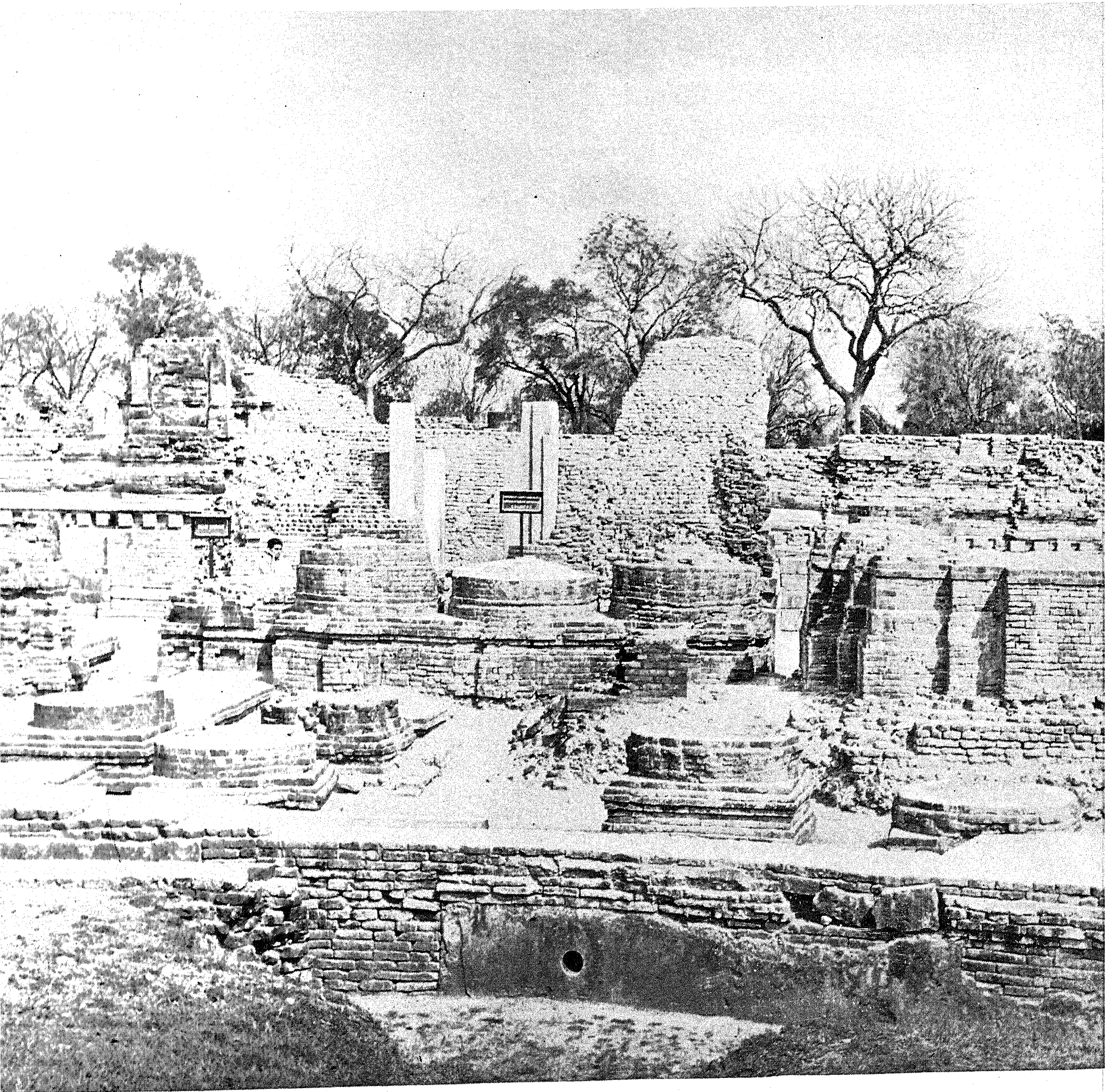
लुंबिनी में बुद्ध-जन्मस्थान पर स्थित अशोक का
अभिलिखित स्तंभ

Inscribed pillar of Asoka on the Birth-place
of Buddha at Lumbini



धमेख (धर्मेक्षा) स्तूप, सारनाथ

Dhamekha Stupa, Sarnath



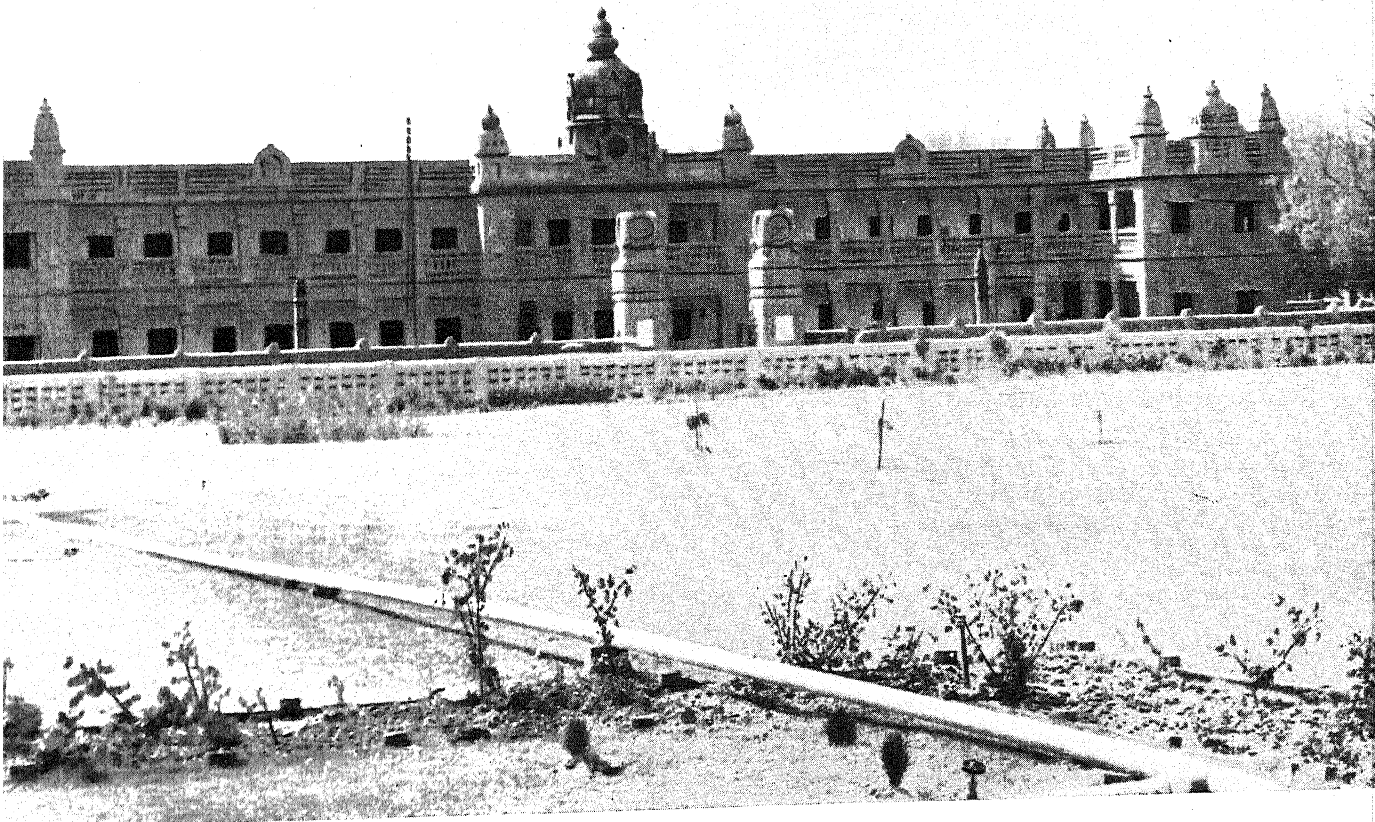
'मृगदाव' को सार्थक करने वाला नया मृग-उपवन, जिसे हाल में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सारनाथ में निर्मित किया गया है।

The new Deer Park constructed by U.P. Government at Sarnath



नवीन मूलगंधकुटी विहार, सारनाथ

The newly built Mulagandhakuti Vihāra
at Sarnath



चीनी मन्दिर, सारनाथ में प्रस्थापित बुद्ध की नवीन प्रतिमा

New Buddha statue in the Chinese Temple at Sarnath



कुशीनगर के बौद्ध संघाराम के अवशेष

Remains of the Buddhist Monastery at
Kusinagar



कुशीनगर का प्रसिद्ध रामाभार टीला

The site of Rāmābhār at Kusinagar



कुशीनगर का बौद्ध स्तूप

The Stūpa at Kusinagar



श्रावस्ती के प्रसिद्ध जेतवन विहार के अंतर्गत निर्मित करेरी कुटी के भग्नावशेष

The site of Kareri Kuti at Sravasti, which formed part of the famous Jetavana Monastery

